परिशिष्ट ४: ग्रामविकास गीते

गीत क्र. १

सेवाभावे व्रत हे अमुचे ग्रामविकासाचे
महन्मंगला मातृभूमीच्या परमवैभवाचे
ग्रामदेवते नमो नमो
भारतमाते नमो नमो ।।धृ।।

पाणी वन ऊर्जा भूमाता
जीव जीवाणू जन गोमाता
जीवन दाता सप्त देवता
ऋण यांचे साताजन्माचे
ग्रामदेवते...।।१।।

गावो गावी जागृत शक्ती
युवा शक्ती अन् धार्मिक शक्ती
मातृ शक्ती अन् सज्जन शक्ती
संघ शक्तीने सज्ज व्हायचे
ग्रामदेवते...।।२।।

ग्राम ग्राम हो सेवा ग्राम
संस्कृतीवाहक मंगलग्राम
प्रेम भक्तीचे गोकुळ धाम
ध्येय हे ग्राम स्वराज्याचे
मातृभूमीच्या चिर विजयाचे
ग्रामदेवते...।।३।।

गीत क्र. २

ग्राम उन्नती हमारा संघठित प्रयास है ।
ग्राम के विकास से देश का विकास है ।।धृ।।

अपने पैरो पर खडे हो ग्राम ग्राम देश के ।
और ध्वज लिए हो सभ्यता विशेष के ।
ग्रामभूमी धन्य है सविधा संपन्न है ।
खेत हल कुठार से फूटता प्रकाश है ।।१।।

श्रम समय का योगदान देंगे और दिलाएंगे ।
अपने साधनोंसे अपना गाव हम बनाएंगे ।
स्वच्छ ताल घाट है, स्वस्थ वृद्ध बाल हैं।
ग्राम संस्कार का फैलता सुवास है ।।२।।

ऊँच नीच भावना ग्राम में रहे नहीं ।
एक व्यक्ती भी यहाँ अनपढ रहें नहीं ।
एक से विचार है एक मन के तार है।
ग्रामभूमी जन्मभूमी लहलहाती आस है ।।३।।

धन्य है की जन्म हमने ग्राम भूमी में लिया ।
अन्न नीर सभ्यता ज्ञान विश्य को दिया ।
ग्राम कर्म भूमी है, ग्राम धर्म भूमी है।
ग्राम विश्व के अखंड दीप का उजास है ।।४।।

गीत क्र. ३

गोवर्धनधारी की दुलारी गौ माँ
साधु संतो मुनियों की प्यारी गौ माँ
ममता की मृदू फुलवारी गौ माँ
पर्यावरण की रखवाली गौ माँ
कदम कदम सुखकारी गौ माँ
हाय फिर भी हय दुखीकारी गौ माँ
संकट में आज है हमारी गौ माँ ।।धृ।।

गौमाता का दूध अमृत समान है
गोबर और मूत्र भी गुणों की खान है
रक्त चाप, मधुमेह, ज्वर, अस्थमा,
कैन्सर जैसे रोगों का ये करें खात्मा
गोमूत्र के जैमूसा अँटिबायोटिक नहीं है
घी से जादा कुछ स्वास्थ्यदायक नही है
हृदय रोग में भी गुणकारी गौ माँ
देश अगर बचाना है, बचाओ गौ माँ ।

***

गीत क्र. ४

शेती आपुली प्राण
शेती जीवन मान
शेती विश्व कल्याण ।।धृ।।

निधळ्या सावरल्या घामाचे
शेती मधल्या कामाचे
घेऊ पुरते दाम
भरूनिया गोदान ।।१।।

अपून काळ्या आईला
पाटा मधल्या पाण्याला
हवा मोकळी सर्वांना
पर्यावरणाची खाण ।।२।।

भूक भागवू जगताची
करून शेती निष्ठेची
आज संघटनेची
भारत भूमीची आन ।।३।।

***

गीत क्र. ५

खुरपण खुरपण शेताचं खुरपण
पीक ठेवून जागेवर तन् काढून वेचून ।।धृ।।

पेरले हो पीक मी शेतात निष्ठेने
आलं कसं तन हे मध्येच उगवून
घालू मुळावर खुरपं कारी धार लावून ।।१।।

पीक माझ्या देशात सज्जन शक्तीचं
वाढतं हो तण त्यात दुर्बल वृत्तीचं
पालटता वृत्ती बने व्यक्ती हो सज्जन ।।२।।

पीक माझ्या मनात सज्जन भक्तीचं
वाढणं हो मण त्यात विषय वृत्तीचं
होण्या मन शुद्ध जाऊ संघाला शरण ।।३।।

***

गीत क्र. ६

कण कण अडवू या, थेंब थेंब जिरवू या
पीक आणि पाण्याचा योग्य मेळ साधू या ।।धृ।।

करू नांगरट आडवी, उताराच्या दिशेला
बांध घालू समतल, पाणी जागी मुरण्याला
प्रक्रिया बियाणला, पेरा करू वाफश्याला
पीक येई तरारूनी, मग नाचू गावू या ।।१।।

करता कोळपणी मिळे, अर्धे पाणी पिकाला
होता विरळणी मिळे, प्रकाश साऱ्या पानाला
अन्न झाले पाणी झाले, पीक वाढे भरारा
राब राबुनी दिसामाजी, अभंगाला गावू या ।।२।।

कापणी करू वेळेला, पीक येई पदराला
निवडू पाखडू सडू कांडू, मूल्य वर्धनाला
मिळण्या दाम घामाचा, लागू प्रक्रियेला
संघटित होऊनी, जाऊ बाजाराला ।।३।।

***

गीत क्र. ७

अखिल विश्व के लिए आम फल, दुध, जुटाने वाले हम
शोषित पीडित हर किसान का, भाग्य जगाने वाले हम
हमे किसी से बैर नहीं है, हमे किसी से भीती नहीं ।।धृ।।

सबसे मिलकर काम करेंगे संघटना की रीती यही
जातीवाद और राजनीती का भेद मिटाने वाले हम ।।१।।

अपने घोर परिश्रम से हम, पैदावार बढा देंगे
कंकर, पत्थर, समतल कर, बंजर में फसल उगा देंगे
भारत माँ का खोया वैभव वापस लाने वाले हम ।।२।।

हर किसी के मुख की रोटी, हरना अपना काम नहीं
अपने हर के लिए सतत, संघर्ष चलाने वाले हम ।।३।।

पुजीपति से लिकर, अफसर साही जाल बिछाती है।
करे रात दिन मेहनत हम, फिर जिलत युद्ध न पाही है।
फिके पौलादी पंजो से, मुक्ती दिलाने वाले हम ।।४।।

अपना पथ आसान नही हैं, यह भी हमने जाना है।
पर मंजिल तक पहुँचेंगे, यह निश्चय हमने ढाना है
त्याग, तपस्या, कुर्बांनी की शमा जगाने वाले हम ।।५।।

***

गीत क्र. ८

स्वावलम्बी स्वाभिमानी भाव जगाना है।
चलें गाँव की ओर, हमें फिर देश बनाना है ।।धृ।।

हर घर में गौ माँ की सेवा, पशुधन का हो पालन ।
नदियों की रक्षा करने से, धरती माँ का पोषण ।
बने औषधि पंचगव्य से, खाद गोबर से ।
स्वच्छ रहेंगे, स्वस्थ रहेंगे, भाव जगाना है ।
जड़ी बुटी से खुशहाली, हर गाँव में लाना है ।
चलें गाँव की ओर, हमें फिर देश बनाना है ...

गाँव में होगी जैविक खेती, जर्मी के नीचे पानी ।
अनाज सब्जी फूल और फल से, सजेगी धरती सारी।
कोई न होगा भूखा प्यासा, पूरी होगी सबकी आशा।
स्नेह और सहकारिता का, भाव जगाना है ।
कृषि आधारित समृद्धि, हर गाँव में लाना है।
चलें गाँव की ओर, हमें फिर देश बनाना है ...

ग्रामोद्योग विस्तार से सबका, निश्चित हो रोजगार ।
जियें सादगी से सब रक्खें, मन में उच्च विचार ।
गाँव का हर बच्चा हो शिक्षित, हर युवा संस्कारी निर्भिक ।
भारत माता की जय हो, यह भाव जगाना है ।
राम राज्य के सपने को, साकार करना है ।
चलें गाँव की ओर हमें फिर देश बनाना है ....

ग्राम नगर वन के सब वासी, भारत की संतान ।
एक संस्कृति एक धर्म है, पुरखे सबके समान ।
ऊँच नीच का भेद भुलाकर, कंधे से कंधा मिलाकर ।
समरसता का गीत गाकर, कदम बढाना है।
चलें गाँव की ओर, हमें फिर देश बनाना है ...

***

गीत क्र. ९ : मेरा गाव - मेरा तीर्थ

अपनी जनमभूमी गाँव को, तीरथ धाम बनाना है।
धरती माता के चरणों में, नित् नित् शीश झुकाना है ।।धृ।।

स्वावलम्बी स्वाभिमानी, समरसता से युक्त हो ।
छुआछूत और भेदभाव की, कुरीतियों से मुक्त हो ।
भारत माँ की संतानें हम, सबको गले लगाना है ।।१।। धरती माता के...

घर घर में हो गाय माता, दूध दही घी माखन हो ।
औषधियों से युक्त रसोई, तुलसी क्यारा आंगन हो ।
खेत खेत से पुन: हमे, जैविक अन्न उगाना है ।।२।। धरती माता के....

कारीगर जो गुमनामी में, उन्हें ढूँढकर लायेंगे ।
माटी धातु काष्ठकला को, फिर सम्मान दिलायेंगे ।
अपने श्रम से स्वर्ण बनाने, की कला सिखलाना है ।।३।। धरती माता के....

मंदिर अच्छा हो विद्यालय, साफ सुथरा गाँव हो ।
कोयल बोले मोर पपीहा, बड पींपल की छाँव हो ।
देखन आवें दूर दूर से, ऐसा गाँव बनाना है ।।४।। धरती माता के....

***